अर्गला स्तोत्र

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

अर्गला स्तोत्र

प्रकार	स्तोत्र
देवता	माँ दुर्गा
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	शाक्त
स्रोत	संस्कृत विकिस्रोत (sa.wikisource.org) — अर्गलास्तोत्रम्, revision 305095
आभार	पाठ: संस्कृत विकिस्रोत योगदानकर्ता (CC BY-SA 4.0)। मिलान, सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Text in the public domain. Transcription from Sanskrit Wikisource, CC BY-SA 4.0.

श्रीचण्डिकाध्यानम्

śrīcaṇḍikādhyānam

ॐ बन्धूककुसुमाभासां पञ्चमुण्डाधिवासिनीम् ।

oṃ bandhūkakusumābhāsāṃ pañcamuṇḍādhivāsinīm |

स्फुरच्चन्द्रकलारत्नमुकुटां मुण्डमालिनीम् ॥

sphuraccandrakalāratnamukuṭāṃ muṇḍamālinīm ||

त्रिनेत्रां रक्तवसनां पीनोन्नतघटस्तनीम् ।

trinetrāṃ raktavasanāṃ pīnonnataghaṭastanīm |

पुस्तकं चाक्षमालां च वरं चाभयकं क्रमात् ॥

pustakaṃ cākṣamālāṃ ca varaṃ cābhayakaṃ kramāt ||

दधतीं संस्मरेन्नित्यमुत्तराम्नायमानिताम् ॥

dadhatīṃ saṃsmarennityamuttarāmnāyamānitām ||

अथवा

athavā

या चण्डी मधुकैटभादिदैत्यदलनी या माहिषोन्मूलिनी ।

yā caṇḍī madhukaiṭabhādidaityadalanī yā māhiṣonmūlinī |

या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथनी या रक्तबीजाशनी ।

yā dhūmrekṣaṇacaṇḍamuṇḍamathanī yā raktabījāśanī |

शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलनी या सिद्धिदात्री परा ।

śaktiḥ śumbhaniśumbhadaityadalanī yā siddhidātrī parā |

सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥

sā devī navakoṭimūrtisahitā māṃ pātu viśveśvarī ||

अथ अर्गलास्तोत्रम्

atha argalāstotram

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

मार्कण्डेय उवाच

mārkaṇḍeya uvāca

ॐ जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतापहारिणि ।

oṃ jaya tvaṃ devi cāmuṇḍe jaya bhūtāpahāriṇi |

जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

jaya sarvagate devi kālarātri namo'stu te || 1 ||

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।

jayantī maṅgalā kālī bhadrakālī kapālinī |

दुर्गा शिवा क्षमा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

durgā śivā kṣamā dhātrī svāhā svadhā namo'stu te || 2 ||

मधुकैटभविध्वंसि विधातृवरदे नमः ।

madhukaiṭabhavidhvaṃsi vidhātṛvarade namaḥ |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ३ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 3 ||

महिषासुरनिर्नाशि भक्तानां सुखदे नमः ।

mahiṣāsuranirnāśi bhaktānāṃ sukhade namaḥ |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ४ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 4 ||

धूम्रनेत्रवधे देवि धर्मकामार्थदायिनि ।

dhūmranetravadhe devi dharmakāmārthadāyini |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ५ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 5 ||

रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि ।

raktabījavadhe devi caṇḍamuṇḍavināśini |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ६ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 6 ||

निशुम्भशुम्भनिर्नाशि त्रिलोक्यशुभदे नमः ।

niśumbhaśumbhanirnāśi trilokyaśubhade namaḥ |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ७ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 7 ||

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।

vanditāṅghriyuge devi sarvasaubhāgyadāyini |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ८ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 8 ||

अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ।

acintyarūpacarite sarvaśatruvināśini |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ९ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 9 ||

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चापर्णे दुरितापहे ।

natebhyaḥ sarvadā bhaktyā cāparṇe duritāpahe |

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १० ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 10 ||

स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि ।

stuvadbhyo bhaktipūrvaṃ tvāṃ caṇḍike vyādhināśini |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ११ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 11 ||

चण्डिके सततं युद्धे जयन्ति पापनाशिनि ।

caṇḍike satataṃ yuddhe jayanti pāpanāśini |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १२ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 12 ||

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि देवि परं सुखम् ।

dehi saubhāgyamārogyaṃ dehi devi paraṃ sukham |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १३ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 13 ||

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि विपुलां श्रियम् ।

vidhehi devi kalyāṇaṃ vidhehi vipulāṃ śriyam |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १४ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 14 ||

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ।

vidhehi dviṣatāṃ nāśaṃ vidhehi balamuccakaiḥ |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १५ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 15 ||

सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ।

surāsuraśiroratnanighṛṣṭacaraṇe'mbike |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १६ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 16 ||

विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तञ्च मां कुरु ।

vidyāvantaṃ yaśasvantaṃ lakṣmīvantañca māṃ kuru |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १७ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 17 ||

देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पनिषूदिनि ।

devi pracaṇḍadordaṇḍadaityadarpaniṣūdini |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १८ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 18 ||

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ।

pracaṇḍadaityadarpaghne caṇḍike praṇatāya me |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १९ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 19 ||

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि ।

caturbhuje caturvaktrasaṃstute parameśvari |

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २० ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 20 ||

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ।

kṛṣṇena saṃstute devi śaśvadbhaktyā sadāmbike |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २१ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 21 ||

हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि ।

himācalasutānāthasaṃstute parameśvari |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २२ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 22 ||

इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ।

indrāṇīpatisadbhāvapūjite parameśvari |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २३ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 23 ||

देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।

devi bhaktajanoddāmadattānandodaye'mbike |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २४ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 24 ||

भार्यां मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।

bhāryāṃ manoramāṃ dehi manovṛttānusāriṇīm |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २५ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 25 ||

तारिणि दुर्गसंसारसागरस्याचलोद्भवे ।

tāriṇi durgasaṃsārasāgarasyācalodbhave |

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २६ ॥

rūpaṃ dehi jayaṃ dehi yaśo dehi dviṣo jahi || 26 ||

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।

idaṃ stotraṃ paṭhitvā tu mahāstotraṃ paṭhennaraḥ |

सप्तशतीं समाराध्य वरमाप्नोति दुर्लभम् ॥ २७ ॥

saptaśatīṃ samārādhya varamāpnoti durlabham || 27 ||

अर्थ

देवी के दो ध्यानों के बाद मार्कण्डेय उन्हें चामुण्डा, जयन्ती, मंगला, काली, भद्रकाली आदि नामों से पुकारते हैं; मधु-कैटभ, महिष, धूम्रलोचन, चण्ड-मुण्ड, रक्तबीज और शुम्भ-निशुम्भ के वध का स्मरण करते हैं और हर श्लोक में रूप, जय, यश और शत्रु-नाश के साथ आरोग्य, समृद्धि और अनुकूल जीवनसाथी माँगते हैं। अन्तिम श्लोक कहता है कि इसे पढ़कर महास्तोत्र सप्तशती का पाठ करें।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।